بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 30.10.2026 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(اخاء महीने की तिथि 30,1405 हश)

तवक्कुल (अल्लाह पर विश्वास) और सादगी के हवाले से सीरतुन्नबी ﷺ का ईमान अफ़रोज़ तज़कर:।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 30.10.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: आंहज़रत ﷺ की सादा ज़िंदगी और सादा रहन-सहन के बारे में ज़िक्र हो रहा था। गुज़िश्ता हफ़्ते इस सिलसिले में आप ﷺ के खाने-पीने में सादगी और खाने-पीने के तरीके के बारे में बयान किया था और यह कि आप ﷺ के सादा रहन-सहन का क्या मअयार था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते कि आंहज़रत ﷺ का हर एक काम अपने अंदर एक सादगी और बे-तकल्लुफ़ी का रंग रखता था। जो लोग उम्दा (अच्छा) खाने के आदी हैं वो तो ख़्याल करते होंगे कि रसूलुल्लाह ﷺ उम्दा-उम्दा खाया करते होंगे और शाहाना दस्तरख़्वान आप ﷺ के आगे बिछता होगा, लेकिन वो मालूम करके हैरान होंगे कि वाक़िआत इसके ख़िलाफ़ थे। अगर एक तरफ़ रसूलुल्लाह ﷺ सादगी का कामिल नमूना थे, तो दूसरी तरफ़ सादा ज़िंदगी में भी आप ﷺ दुनिया के लिए नमूना थे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत आइशा रज़ि. ने अपने भानजे उरवा को फ़रमाया कि ऐ मेरे भानजे! हम लोग तो हिलाल (चाँद)के बाद हिलाल देखा करते थे यहाँ तक कि तीन हिलाल देख लेते। यानी चाँद के दो माह गुज़र जाते और आप ﷺ के घर पे आग न जलती। सवाल करने वाले ने पूछा फिर आप ﷺ क्या खाते थे? हज़रत आइशा रज़ि. ने फ़रमाया कि पानी और खजूर खाया करते थे और अंसार पड़ोसी बकरियों का दूध भिजवाया करते थे।

अल्लाह-अल्लाह! कैसी सादा ज़िंदगी है कि दो-दो माह तक आग ही नहीं जलती और सिर्फ़ खजूर, पानी और दूध पर गुज़ारा होता है। इस तारीख़ को देखकर मुसलमानों को शरमाना चाहिए। कुछ अमीर लोग मुसलमानों में भी हैं जो आज-कल इसी खाने-पीने की मर्ज़ में गिरफ़्तार हैं। उनकी

देखा-देखी कम हैसियत वाले भी ज़्यादा ख़र्च करने की कोशिश करते हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुसलमानों का रुपया खाने-पीने में ज़्यादा ख़र्च हो जाता है और क़र्ज़ में दबे रहते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आज-कल डिमांड ज़्यादा हो रही होती हैं कि हमारे खाने-पीने के मयार अच्छे नहीं। हालाँकि जो भी आमदनी हो उसमें गुज़ारा करना चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ अगर एक तरफ़ सादगी का नमूना थे, तो दूसरी तरफ़ रहबानियत (सन्यास) को भी नापसंद फ़रमाते। अगर आला से आला गिज़ा भी पेश की जाती तो उसे भी इस्तेमाल करते। ये नहीं कि नफ़्स-कुशी (मन को मारना) के लिहाज़ से खाने से इन्कार कर देते। यही मयार आप ﷺ को दूसरों पर फ़ज़ीलत देता है क्योंकि आप ﷺ तमाम दुनिया के लिए आए थे न कि किसी ख़ास समूह के लिए। इसलिए आप ﷺ का कामिल होना लाज़मी था। एक तरफ़ आप ﷺ सादा ज़िंदगी में कमाल रखते थे तो दूसरी तरफ़ पाक चीज़ों के इस्तेमाल से बचते, लेकिन आम तौर पर आप ﷺ का गुज़ारा सादा ज़िंदगी पर होता और खाना इसलिए खाते कि ज़िंदगी का ताल्लुक़ बना रहे और काम करने की ताक़त पैदा होती रहे।

आंहज़रत ﷺ ने अपनी ज़िंदगी में यह नमूना भी दिखा दिया कि हर किस्म की आला से आला गिज़ायें भी इस्तेमाल फ़रमाईं और दूसरी तरफ़ सादा ज़िंदगी से हमारे उमरा (अमीरों) के लिए भी नमूना कायम कर दिया जिनकी ज़िंदगी का इंतहाई मक़सद आला ख़ुराक और पोशाक होती है।

हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि अच्छा खाना खाने के मुतअल्लिक़ एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ बकरी के शाने (कंधा)का गोश्त खा रहे थे। हज़रत मसीह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने छुरी से गोश्त काटकर खाया और ये तरीका इसलिए किया कि उम्मत को तकलीफ़ न हो। जाइज़ ज़रूरतों पर इस तरह खाना जाइज़ है, लेकिन उसका पाबंद होना और औपचारिकता करना और दूसरे तरीकों को हक़ीर(तुच्छ,छोटा) जानना मना है। अगर दूसरी क़ौमों की पैरवी करने लग जाएं तो इंसान तहारत भी छोड़ देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कई बार काम करते हुए मेज़ पर भी खा लेते थे। ज़मीन पर बैठकर भी खा लेते थे।

हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि आंहज़रत ﷺ की शादी और वलीमे के मुतअल्लिक़ ये रिवायत मिलती है कि नबी करीम ﷺ ने हज़रत सफ़िया रज़ि. को आज़ाद कर दिया और उनसे शादी की। उनका आज़ाद होना ही उनका महर था। इसी सफ़र के दौरान रसूल करीम ﷺ ने सुबह के वक्त दस्तरख़्वान बिछा दिया और सब को कहा कि जिसके पास जो भी है वो ले आए। कोई खजूरें ले आया, कोई घी और कोई सत्तू। फिर उन सबको मिलाकर आपस में गूँध दिया और यही रसूलुल्लाह ﷺ का वलीमा था।

हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि हर एक की दावत आप ﷺ कुबूल फ़रमाया करते थे। हज़रत अनस रज़ि. रिवायत करते हैं कि एक दरज़ी ने रसूलुल्लाह ﷺ को मदऊ (आमंत्रित) किया। कहते हैं कि मैं भी रसूलुल्लाह ﷺ के साथ दावत में गया। उसने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में जौ की रोटी और शोरबा पेश किया जिसमें कद्दू और ख़ुश्क गोश्त के टुकड़े थे। हज़रत अनस रज़ि. कहते हैं कि मैंने देखा कि आप ﷺ प्याले से कद्दू चुन-चुनकर खा रहे हैं। उस दिन से मैं भी कद्दू पसंद करने लगा हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि कद्दू आप ﷺ को बहुत पसंद थे। फिर वो वक्त भी आया कि जब आप ﷺ को खाना नसीब न हुआ। वो शख़्स मूर्ख है जो कहता है कि मुहम्मद

रसूलुल्लाह ﷺ ने अच्छा गोश्त क्यों खाया, जो कहता है मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने अच्छा व शाहाना शर्बत क्यों पिया, अच्छा खाना क्यों खाया। क्योंकि वह यह नहीं देखता कि मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़ाके भी किए और अपने पेट पर पटके भी बांधे। ऐसे दिन भी आप ﷺ पर आए कि एक फ़क़ीर औरत आप ﷺ के घर पर माँगने आई तो हज़रत आइशा रज़ि. फ़रमाती हैं कि उस दिन हमारे घर पर कुछ नहीं था और तलाश करने पर सिर्फ़ एक खजूर मिली। उस औरत ने उस खजूर के दो टुकड़े किए और अपनी दोनों बेटियों को दे दिए। हज़रत आइशा रज़ि. ने इस घटना का ज़िक्र अल्लाह के रसूल ﷺ से किया। पैगंबर ﷺ ने कहा कि अगर किसी के घर में दो बेटियाँ हों और वो उनकी अच्छी परवरिश करे तो अल्लाह उस पर जन्नत वाजिब कर देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ की सीरत जब कोई सुनता या पढ़ता है तो उसमें बयान किए हुए हर वाक़ए में तरबियत और हिकमत और नसीहत के कई पहलू नज़र आ जाते हैं और यही हमें इस रिवायत में नज़र आता है। हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि तफ़्सीर-उल-क़ुरआन में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. सीरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि खाने-पीने में आप ﷺ सादगी को ध्यान में रखते थे। कभी नमक ज़्यादा हो जाए या न हो या ख़राब पका हो तो कभी इज़हार-ए-नाराज़गी नहीं फ़रमाते थे। जहाँ तक मुमकिन होता था ऐसा खाना खाकर खाना पकाने वाले को दिल-शिकनी से बचा के रखते और अगर पसंद न आता तो हाथ रोक लेते लेकिन ज़ाहिर न फ़रमाते। जब कोई चीज़ आती तो सहाबा रज़ि. में बाँट कर खाते। एक दफ़ा खजूरें आईं तो सात-सात खजूरें सहाबा रज़ि. में बाँट दी।

हज़रत आइशा रज़ि. बयान फ़रमाती हैं कि मैंने रसूल करीम ﷺ को कभी गाली देते हुए नहीं देखा और न ही आप ﷺ के लिए कभी कोई कपड़ा तह किया गया। यानी एक ही जोड़ा होता था, कोई दूसरा नहीं था जो तह करके रखा जाता। कपड़ों को धोना ज़रूरी होता तो उसी तरह धोकर बाहर चले जाते कि पानी का निशान भी उस पर नज़र आता।

यह सादगी का वह नमूना है जो कोई साहिब-ए-हैसियत न दिखा सकता है और न कभी किसी ने दिखाया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने कहा है कि हज़रत उमर रज़ि. ने अतारेद तमीमी को एक धारीदार रेशमी कपड़ा बाज़ार में बेचते हुए देखा। वो शख़्स बादशाहों के पास जाकर इनाम हासिल करता था। इस पर हज़रत उमर रज़ि. ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ मैंने अतारेद तमीम को रेशमी धारियों वाला कपड़ा बेचते हुए देखा है। जब कोई वुफ़ूद आप ﷺ के सामने हाज़र हों तो वो पहन लें तो उसका अच्छा असर होगा या अर्ज़ किया कि जुमे के दिन पहन लिया करें। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि इस दुनिया में रेशम वही पहनता है जिसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।

इन वाक़िआत के ज़िक्र के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि पोशाक में रसूलुल्लाह ﷺ इस कदर सादगी फ़रमाते थे, कि वास्तव में यह हालात पढ़कर मुझे शरम आ जाती है। बेशक अब हालात तब्दील हो गए हैं, लेकिन फिर भी ये वाक़िआत पढ़कर शरम आती है। अगर पोशाक के फ़र्क को निकाल भी दें तो भी अल्लाह के रसूल ﷺ की ज़िंदगी बहुत सादी थी और इसके बग़ैर दुनिया की तरक़्क़ी का सामान नहीं हो सकता था।

हज़रत समरह बिन जुनदब रज़ि. से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फरमाया: "सफेद कपड़े पहनना, क्योंकि यह ज़्यादा पाकीज़ा है और ज़्यादा उम्दा हैं और इसमें अपने मुर्दे को कफ़न दो"।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि किसी शख़्स ने पेट से ज़्यादा ख़राब बर्तन नहीं भरा। इब्ने आदम के लिए चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जो उसकी कमर को सीधा रखें। यानी पेट भी एक बर्तन है इसे भरते जाओ तो उसमें ख़राब ही पैदा होती जाएगी। फ़रमाया कि एक तिहाई खाने के लिए रखो, एक तिहाई पानी के लिए है और एक तिहाई साँस के लिए रखो। यानी भूख छोड़कर खाओ। मेदे की तकलीफ़ वालों को डॉक्टर यही मशविरा देते हैं जो आज से चौदह सौ साल पहले रसूलुल्लाह ﷺ ने दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि सादा ज़िंदगी की वजह से लोग इस बात के आदी होंगे कि दुखों को बर्दाश्त कर सकें और बावजूद तकलीफ-ए-अय्याम के उन्हें तकलीफ़ का एहसास न होगा। फ़रमाया जैसे आज-कल हम देख रहे हैं कि यूरोप के नज़दीक जो मुश्किलात हैं वो हमारे रोज़मर्रा ज़िंदगी का भाग हैं । जिनको वो आफ़तें और मुसीबतें ख़्याल करते हैं वो हमारे नज़दीक राहत और आराम हैं। इसलिए इन तकलीफ़ों का हमें पता भी नहीं लगता। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि थोड़े दिन हुए बा'ज़ ने मुझसे कहा कि कपड़ों का मिलना मुश्किल हो रहा है, जबकि एक मोमिन की तो हालत ये होती है कि कपड़ा मिल गया तो पहन लिया, नहीं मिला तो पुराने कपड़े को (पेवंद) अस्थायी मरम्मत के ज़रिए काम चला लेता है। रसूल करीम ﷺ के कपड़ों को पेवंद लगे होते थे। क्या हम उनसे बड़े हैं कि हम अपने कपड़ों को पेवंद न लगा सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यादहुल्लाह ने फ़रमाया कि आज-कल की दुनिया का मुश्किलात में यही शोर उठ रहा है कि ये नहीं मिलता, वो नहीं मिलता और अगर आलमी जंग (विश्व युध्द)शुरू हो गई तो फिर पता नहीं और मज़ीद क्या हालात ख़राब हों। मैं पहले भी कई दफ़ा कह चुका हूँ कि बढ़ती हुई जंग के हालात पैदा होते जा रहे हैं और अगर मज़ीद जंग होती है तो यूरोप भी और तमाम दुनिया भी ख़ुराक के लिहाज़ से मुश्किल दौर में से गुज़रेगी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. ने उस समय के भारत का उदाहरण दिया, लेकिन अफ्रीका और कम विकसित देशों में स्थिति वैसी नहीं है कि उनको सादा गिज़ा भी मिल जाए तो बड़े ख़ुश होते हैं। वो लोग जंग के हालात बर्दाश्त कर लेंगे, लेकिन यूरोप और ये तरक़्क़ीयाफ़्ता मुमालिक (विकसित देश) बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे और ये हालात उन्हें बहुत ज़्यादा परेशान कर देंगे। पस हमें भी अपनी हालतों का जायज़ा लेते रहना चाहिए और क़नाअत पैदा करनी चाहिए। सादा ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश करनी चाहिए। रसूलुल्लाह ﷺ के नमूने और उस वक्त को सामने रखना चाहिए। अच्छी चीज़ें, खाने मय्यसर हों तो ज़रूर खाएं। अच्छी चीज़ें मय्यसर हैं तो ज़रूर पहनें, लेकिन उन पर निर्भरता करना और अगर न मिले तो शोर मचाना कि मर गए, ये ग़लत चीज़ है। बहरहाल ये दुआ भी करनी चाहिए कि अल्लाह तआला दुनिया को इन आफ़ात से बचाए। अपनी अनाओं (अहंकार)की वजह से ये तबाही के गढ़े में गिरने की कोशिश कर रहे हैं। अगर यही हालात रहे तो जंग-ए-अज़ीम (विश्व युध्द)तो यक़ीनी है और फिर इनकी तबाही भी यक़ीनी है। दूसरों के माल और ज़मीन पर कब्ज़ा करने के बजाय इन लोगों को चाहिए कि अपनी अवाम की खिदमत करें। अल्लाह तआला हमें भी नेकियों पर कायम रहने की तौफ़ीक अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131